Dr.Sunita Kumari, Guest Asst Prof,
Dept of H.Sc
SNSRKS College, Saharsa
Part-I &II(H)

प्रसार शिक्षण विधियाँ

प्रसार शिक्षण की विभिन्न विधियों का वर्गीकरण
Classification of different methods of Extension teaching (Education)

Ans:- प्रसार शिक्षा एक अनौपचारिक शिक्षा है जो मूलतः ग्रामीण जनजीवन से संबंधित समस्याओं के समाधान एवं ग्रामीण जनों के लिए उपयोगी एवं व्यावहारिक सूचनाओं, ज्ञान, एवं जानकारी को उन तक पहुँचाने तथा ग्रामीण जनजीवन के विभिन्न पहलुओं में विकासात्मक परिवर्तन लाने के लिए आवश्यक शिक्षण-प्रशिक्षण उपलब्ध कराने से संबंधित शिक्षा होती है। इसमें ग्रामीणों को उपयुक्त पहुँच के द्वारा अपनी सहायता स्वयं करने के लिए प्रेरित किया जाता है। यह एक सतत शिक्षा की प्रक्रिया है जिसमें प्रसार कार्यकर्ता तथा ग्रामीण दोनों का ही योगदान रहता है।

प्रसार शिक्षा की कुछ शिक्षण विधियाँ होती हैं। प्रसार शिक्षण की विधियों के माध्यम से प्रसार कार्यकर्ता विभिन्न व्यक्तियों के समूह अथवा सामान्य जनता तक पहुँचकर प्रसार कार्यक्रमों को उनके बीच पहुँचाते हैं, उनका प्रचार प्रसार करते हैं। इसी कारण इन शिक्षण विधियों को प्रसार पहुँच विधियाँ (Extension Approach Method) भी कहा जाता है। [illegible]

केल्से एवं हर्न के अनुसार, प्रसार की विधियाँ प्रसार कार्यकर्ता के लिए उतनी ही आवश्यक है जितनी एक मैकेनिक (मिस्त्री) के लिए मशीन, रिंच, पेंचकस, पिलाई तथा हथौड़े आवश्यक होते हैं।

प्रसार कार्यकर्ता के लिए प्रसार विधियाँ अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। समाज की व्यावहारिक आवश्यकताओं एवं परिस्थितियों को दृष्टिगत रखकर ही प्रसार विधि का चयन किया जाता है। किसी विशेष परिस्थिति में विशेष विधि ही उपयुक्त सिद्ध हो सकती है।

प्रसार शिक्षण या प्रसार पहुँच विधियों का वर्णन निम्नलिखित रूप से किया जा सकता है।

(1) व्यक्तिगत संपर्क विधि (Individual contact method):- इस विधि को प्रत्यक्ष पहुँच विधि भी कहा जाता है। इस विधि के माध्यम से प्रसार कार्यकर्ता अपने विषय अर्थात अपने शिक्षार्थी या जनता के साथ व्यक्तिगत संबंध या प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित करता है। व्यक्तिगत या प्रत्यक्ष संपर्क-संबंध स्थापित करने के लिए के लिए निम्नांकित तरीकों का उपयोग किया जा सकता है। यह विधियाँ निम्नलिखित है -

(i) फार्म या घर पर मिलना :- प्रसार कार्यकर्ता गृहस्थों, कृषकों, ग्रामीणों अथवा किसी भी ऐसे व्यक्ति या व्यक्तियों या परिवार से जिनसे या जिनसे मिलना आवश्यक हो, उनके या उनके फार्म या खेत पर और घर पर मिलने जाते हैं। वे उनसे इन दोनों स्थलों पर भेंट-मुलाकात करते रहते हैं और भेंट मुलाकात के सिलसिले में उनके साथ घनिष्ठता, मित्रता एवं आत्मीयता स्थापित करते हैं। इसके बाद शिष्टाचारीय भेंट-मुलाकातों के माध्यम से वे धीरे-धीरे उनकी समस्याओं से अवगत होते हैं और जब वे उनकी समस्याओं से पूरी तरह अवगत हो चुके होते हैं तब धीरे-धीरे उन्हें वे उन समस्याओं का निदान सुझाते हैं।

(ii) कार्यालय में भेंट करना :- ऐसे ग्रामीण, गृहस्थ, कृषक या अन्य व्यक्ति जो कार्यालयों से जुड़े होते हैं, तथा जिनसे किसी कारणवश उनके फार्म या घर पर भेंट मुलाकात नहीं हो सकती है उनसे प्रसार कार्यकर्ता उन्हें कार्यालय में मिलते हैं। इस भेंट-मुलाकात की अवधि में वे उनसे आवश्यक विचार-विमर्श कर लेते हैं।

(iii) दूरभाष पर बातचीत :- उन व्यक्तियों के साथ जिनके साथ टेलीफोन पर बातें करने की सुविधा उपलब्ध हो, प्रसार कार्यकर्ता टेलीफोन पर बातें कर व्यक्तिगत संपर्क स्थापित कर सकते हैं तथा आगे की भेंट-मुलाकात एवं अधिक समय तक चलनेवाली बातचीत के लिए उपयुक्त समय एवं स्थल का निर्धारण कर सकते हैं।

(iv) व्यक्तिगत पत्र :— अगर किसी कारणवश फार्म, घर या कार्यालय में भेंट-मुलाकात न हो सके तथा इसके बाद भी संपर्क स्थापित नहीं किया जा सके तब प्रसार कार्यकर्ता पत्र लिखकर पत्राचार के माध्यम से संपर्क स्थापित करते हैं।

(2) दल संपर्क विधि (Group contact method) —

(i) विधि प्रदर्शन (Method demonstration) :— प्रसार कार्यकर्ता किसी कार्य को करने की उन्नत एवं विकसित विधि अपनाने के लिए विधि प्रदर्शन कार्यक्रम प्रस्तुत कर रहा हो। तब वह उसी कार्य को करने की पुरानी पद्धति का भी प्रदर्शन करे तथा नई एवं प्राचीन पद्धतियों के गुण-दोष का तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत करें।

(ii) परिणाम प्रदर्शन (Result demonstration) :— परिणामों को प्रदर्शित करना भी एक महत्वपूर्ण प्रसार शिक्षण विधि है। ब्रूर के अनुसार, "परिणाम प्रदर्शन जनता को परिष्कृत विधि का मूल्य दिखाने का तरीका है।" इसकी व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है कि परिणाम प्रदर्शन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जनता को किसी भी काम, चाहे वह कृषि के क्षेत्र में हो या पशुपालन के या अन्य किसी क्षेत्र में, को करने के लिए अपनाई जानेवाली प्राचीन विधियों की जगह आधुनिक उन्नत या विकसित विधियाँ अपनाने से होनेवाले परिणामों को प्रदर्शित किया जाता है।

(iii) मिश्रित प्रदर्शन (Combined demonstration) :— इसके अंतर्गत विधि प्रदर्शन एवं परिणाम प्रदर्शन दोनों साथ-साथ चलाए जाते हैं। दोनों प्रदर्शनों को अलग-अलग किए जाने की अपेक्षा दोनों को साथ-साथ किया जाना श्रम, समय एवं लागत तीनों दृष्टिकोणों से अधिक लाभकारी, प्रभावोत्पादक, विश्वसनीय एवं प्रामाणिक होता है।

(iv) सम्मेलन व संगोष्ठियाँ :— प्रसार शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ आयोजित करना एक महत्वपूर्ण प्रसार शिक्षण विधि है। सम्मेलन, सेमिनार या संगोष्ठी विभिन्न प्रकार एवं प्रकृति की हो सकती हैं। इनकी सफलता या असफलता का दायित्व प्रसार कार्यकर्ता पर होता है।

(v) चर्चाएँ ! — चर्चाएँ मात्र मौखिक अथवा मौखिक-सह-प्रदर्शनात्मक हो सकती हैं, पर प्रसार के क्षेत्र में सर्वदा मौखिक सह-प्रदर्शनात्मक चर्चाओं का आयोजन करना लाभदायक होता है। प्रसार कार्यकर्ता द्वारा इन चर्चाओं का आयोजन किया जाता है। भारत देश जैसी चर्चा अत्यधिक लाभदायक होती है। पर, यह संभव है कि बिना सरकारी आर्थिक सहायता के प्रसार कार्यकर्ता को ग्रामीणों के लिए ऐसी चर्चा आयोजित करने में कठिनाई का अनुभव हो। अतः उसे अधिकांशतः कम समय एवं कम लागत वाली चर्चाओं का आयोजन करना चाहिए।

(3) जन-सम्पर्क विधि (Mass contact method) — इस विधि के अन्तर्गत प्रसार कार्यकर्ता जनता के साथ सम्पर्क बनाने के लिए निम्नलिखित तरीके अपना सकता है —

(i) सिनेमा एवं स्लाइड्स (Cinema and slides)
(ii) सारणी एवं मॉडल (Exhibits and models)
(iii) रेडियो, टेलीविजन एवं टेपरिकॉर्डर (Radio, television and Taperecorder)
(iv) चार्ट, पोस्टर, पर्चे, मैगजीन (Chart, posters, Leaflets, Magazine)

इस विधि में ध्यान देने योग्य बातें (Matters to be paid attention to): — जन-सम्पर्क विधि में प्रसार कार्यकर्ता को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना चाहिए —

(i) जिस क्षेत्र की जनता के बीच काम करना है उस क्षेत्र की जनता का बौद्धिक तथा आर्थिक स्तर।
(ii) उस क्षेत्र की भौगोलिक स्थिति एवं वातावरण।
(iii) उस क्षेत्र में दृश्य-श्रव्य उपकरणों, चार्ट, पोस्टर, चित्र, मैगजीन आदि के रख-रखाव की सुविधा।

जन-सम्पर्क विधि की विशेषता (Features of mass contact method): — इस विधि की विशेषता यह है कि इसकी सहायता से जनसंख्या के एक बड़े भाग को सुगमतापूर्वक प्रभावित किया जा सकता है। श्रव्य-दृश्य उपकरणों का उपयोग इस विधि को विश्वासोत्पादक बनाता है।

Kumari